सच्चा साथी

मोहन सदा की भांति स्कूल जा रहा था। रास्ते में उसने बहुत सारे कौवे को इकट्ठा देखा। नजदीक आने पर उसे एक **नेवले** का छोटा बच्चा घायल अवस्था में पड़ा हुआ दिखा, शायद कौवों ने उसे घायल कर दिया था।

उस घायल नेवले को देखकर **उसका मन द्रवित** हो उठा। वह नेवले को लेकर घर आया और उसकी मरहम पट्टी में उसकी उस दिन की पढाई **अपूर्ण** हो गई, लेकिन उसे **परम शांति का अनुभव हुआ।**

जिस प्रकार माता अपने नन्हे बालक की देख भाल करती है, वही कार्य मोहन का उस नन्हे नेवले के साथ था। स्कूल से आने के पश्चात मोहन उस नेवले के साथ खेलता था। इसलिए उसे प्रायः घर वालों की डांट भी पड़ती थी।

लेकिन मोहन को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। गर्मी का समय था। **सभी लोग अपनी चारपाई पर निद्रा देवी के स्वागत में लीन थे**। खर-खराहट की आवाज से मोहन की नींद टूटी और वह टार्च जला कर देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसका नन्हा दोस्त मौत (सांप) के सामने साक्षात मौत बनकर खड़ा था और मौत को ललकार भी रहा था।

मोहन अपने घर के सभी सदस्यों को यह दृश्य दिखाया और किसी को हस्तक्षेप करने की सलाह नहीं दी। दस मिनट के बाद मोहन का नन्हा साथी मौत को परास्त कर चुका था। यह दृश्य देखकर उस नन्हे जीव के प्रति सबकी सोच बदल चुकी थी, और सभी उसका विशेष ध्यान देने लगे।

चतुराई

5- यह **Famous Hindi Short Stories** चतुराई पर आधारित कहानी है। इस Famous Hindi Short Stories में दिखाया गया है कि कैसे चतुराई से **सोनपरी** जिन्ह से बच जाती है।

एक दिन की बात है। **परीलोक** पर **पाताल लोक** का जिन्ह आक्रमण कर देता है। वह परीलोक पर कब्जा जमाना चाहता है। वह अपनी शक्तियों से परी लोक में भारी तबाही मचाता है।

इससे पुरे परीलोक में हाहाकार मच जाता है। इसपर सभी परियां इकट्ठे होकर **लाल परी** और **रानी परी** के पास जाती है और उन्हें इस भीषण तबाही की खबर देती है।

इसके बाद रानी परी, लाल परी और **काली परी** तथा अन्य परियों को उस जिन्ह से लड़ने के लिए भेजती हैं। लेकिन **जिन्ह** की ताकत के आगे सभी परियां हार जाती हैं।

उसके बाद उस जिन्ह से लड़ने के लिए रानी परी खुद जाती है और उस जिन्ह से पूछती है आखिर तुम्हें क्या चाहिए ? तुम इस परीलोक पर आक्रमण क्यों कर रहे हो ?

तब वह जिन्ह बोलता है, " मैं परीलोक पर कब्जा चाहता हूं। मैं तुम परियों को अपनी दासी बनाना चाहता हूं।" तब रानी परी कहती है, " इसके लिए तुम्हें मुझसे युद्ध करना पड़ेगा।"

इसपर जिन्ह जोर से हंसता है और कहता है, " सभी परियां मुझ से हार चुकी है। तुम्हें अपनी ताकत पर बड़ा घमंड है। " तब रानी परी कहती है, " मैं कोई साधारण परी नहीं हूं। मैं रानी परी हूं। मेरे पास इन परियों से अलग शक्तियां है और मैं तुम्हें हरा दूंगी। "

जिन्ह फिर हंसता है और कहता है, " ठीक है, जैसा तुम चाहो। " उसके बाद दोनों के बीच घमासान लड़ाई शुरू जाती है और अंत में रानी परी को भी हार का सामना करना पड़ता है।

पुरे परीलोक पर जिन्ह का कब्जा हो जाता है। वह परियों से बहुत बुरे-बुरे काम करवाता है और उन्हें परेशान करता है। कभी वह परीलोक पर तबाही मचाने के लिए कहता है तो कभी धरती लोक पर तो कभी बच्चों को परेशान करने के लिए कहता।

परियां इससे बहुत दुखी होती है। यह सब देख कर नन्ही सोनपरी भी बहुत दुखी होती है। वह जिन्ह को भगाने का उपाय सोचने लगती है। तभी उसे एक आईडिया आता है।

वह जिन्ह पास जाती है और उससे कहती है, " हे जिन्ह, तुम बहुत अच्छे हो। आपने परियों को बहुत अच्छा सबक सिखाया है। अब कृपया मेरी एक मदद करो। "

इसपर जिन्ह ने कहा, " तुम कौन हो और मेरी इस तरह से तारीफ़ क्यों कर रही हो और तुम्हे क्या मदद चाहिये ?" तब सोनपरी ने कहा, " मैं सोनपरी हूँ। इन परियों ने मेरी माँ को एक बोतल में बंद कर दिया है। "

" लेकिन भला क्यों ? आखिर वह भी तो परी ही थी न। " जिन्ह ने सोनपरी से पूछा। " हाँ, वह परी ही है लेकिन उन्हें एक ऐसे जादुई हीरे के बारे में पता है जिससे परियों की शक्तियां और भी बढ़ जाती और उसी हीरे को छिनने के लिए वह मेरी माँ पर दबाव बना रही थीं और जब मेरी माँ ने उस हीरे के बारे में नहीं बताया तो परियों ने उन्हें कैद करके एक बोतल में डाल दिया। अगर आप मेरी माँ को आजाद कराते हैं तो मैं माँ से पूछ कर आपको हीरे के बारे में बता दूंगी। इससे आप और भी ताकतवर हो जायेंगे। " सोनपरी ने कहा।

जिन्ह ने सोनपरी की बात मान ली और वह सोनपरी के साथ चल पड़ा। सोनपरी एक कमरे में आई और एक बोतल लाकर जिन्ह के पास रख दिया।

जिन्ह ने उस बोतल को देखा और पूछा, " यह तो खाली बोतल है। तुम्हारी माँ कहाँ हैं ? " तब सोनपरी ने कहा, " मेरी माँ इसी बोतल में हैं। परियों ने अपनी जादुई शक्ति से उन्हें अदृश्य कर दिया है। जब कोई इस बोतल में प्रवेश करेगा तभी मेरी माँ उसे दिखेगी। "

जिन्ह सोनपरी की बातों में आ चुका था। वह हीरे की लालच में उस बोतल में जा घुसा। जिन्ह जैसे ही बोतल में घुसा सोनपरी ने उस बोतल का ढक्कन बंद कर दिया।

ढक्कन बंद होते ही जिन्ह उसमें कैद हो गया। वह बार - बार ढक्कन खोलने को कहने लगा , लेकिन सोनपरी भला क्यों खोलती ढक्कन ? यह सब तो उसका प्लान था।

उसने तुरंत ही बाकी सभी परियों को बुलाया। जब परियों ने जिन्ह को बंद देखा तो बड़ी खुश हुईं। उन्होंने उस बोतल को सागर में फेक दिया और सभी ख़ुशी से रहने लगे।